वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान में मनाये गये हिन्दी कार्यशाला का रिपोर्ट

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बत्तूर में राजभाषा के प्रचार-प्रसार में प्रगति पाने के लिये प्रतिवर्ष अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में 13 जून 2018 को इस संस्थान में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय था – "सरकारी कामकाजों में सहज एवं सरल हिन्दी"। इस विषय पर विस्तार से चर्चा करने के लिये भविष्य निधि संगठन, कोयम्बत्तूर से श्री.एस.वीरमणिकण्डन, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक, को आमंत्रित किया गया।

प्रार्थना के साथ इस कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। इस कार्यशाला को आगे बढाते हुए सर्वप्रथम श्री.एस.सेंदिलकुमार,भा.व.से, हिन्दी अध्यक्ष ने सभी का स्वागत किया। उसके बाद डॉ.वी.कु.व.बाचपई, वैज्ञानिक – डी एवं हिन्दी नोडल अधिकारी ने हिन्दी कार्यशाला आयोजित करने के मुख्य उद्येश्य से सभी को अवगत कराया। डॉ.मोहित गेरा, भा.व.से., निदेशक जी ने हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए हिन्दी कार्यशाला पर अपना विचार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि हिन्दी हमारी राजभाषा है और सरकारी कामकाजों में हिन्दी का प्रयोग करना प्रत्येक सरकारी कर्मचारी का कर्तव्य है। सभी को दिल से अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये। मुख्य अथिति श्री.एस.वीरमणिकण्डन, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक ने कार्यशाला का शुभारंभ किया। इस कार्यशाला के अंतर्गत उन्होंने राजभाषा के नियम एवं प्रावधानों का संक्षिप्त परिचय दिया और कहा कि निम्नलिखित मुख्य विषयों प्राथमिकता देकर कार्यवाही की जानी चहिये:

1. नियम – 5 के अनुसार, वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन के द्वारा प्राप्त सभी हिन्दी पत्रों का उत्तर हिन्दी में ही दिया जाना चाहिये और आवक रजिस्टार में उसका रिकॉर्ड हिन्दी में ही रखना चाहिये।

2. नियम – 11 के अनुसार, सभी मानक फार्मों, रजिस्टर, नामपट्ट, परिचय कार्ड, रबड मोहरें, साइन बोर्ड आदि द्विभाषिक या त्रिभाषिक होने चाहिये। सभी भाषाएँ उचित क्रम में प्रतिबिंबित होने चाहिये। त्रिभाषिक रूप में लिखते समय पहले क्षेत्रीय भाषा, हिन्दी और अंग्रेजी क्रम में लिखना चाहिये।
3. हिन्दी में पत्र एवं टिप्पणी लिखने के लिये उपयुक्त कम्प्यूटर साफ्टवेयर जैसे सारांश यूनिकोड, माइक्रोसाफ्ट भाषा आदि का प्रयोग किया जाये।

फायलों में टिप्पणियों का प्रयोग आसानी से किस तरह किया जा सकता है इस पर भी चर्चा की। फिर कर्मचारियों के द्वारा पूछे गये प्रश्नों का जवाब देकर अपने भाषण को समाप्त किया। फिर निदेशक जी ने अपने कमल हस्थों से मुख्य अथिति को एक स्मृति चिन्ह भेंट किया।

अंत में श्रीमती पूंगोदै कृष्णन, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक ने सभी को धन्यवाद देकर इस कार्यशाला को सम्पन्न किया।

सभी का स्वागत करते हुए

कार्यशाला उद्येश्य से सभी को अवगत कराते हुए

निदेशक के द्वारा भाषण

मुख्य अथिति के द्वारा कार्यशाला के विषय पर चर्चा

स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

धन्यवाद प्रस्ताव करते हुए

सभा में उपस्थित कर्मचारियाँ